इन्क़िलाबी नज़र
आवाज़ ... आम आदमी की
लखनऊ, शनिवार, 15 अप्रैल 2023
वर्ष 15 अंक 220 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।
-अल्बर्ट आइंस्टीन

तापमान - अधिकतम 38.4°C (+0.2) न्यूनतम 22.8°C(+2.2) सेंसेक्स 60,431.00 (+038.23) निफ्टी 17,828.00 (+015.60) सोना 61,950 चांदी 79,600 मुद्रा - डालर 81.90 दिरहम 22.30 रियाल 21.84

एरा विश्वविद्यालयः कांटैक्ट लेंस पर सीएमई कम कार्यशाला का आयोजन

लखनऊ (सं)। एरा विश्वविद्यालय के ऑप्टोमेट्री विभाग की ओर से दो दिवसीय कांटैक्ट लेंस पर सीएमई कम कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन एरा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अब्बास अली महदी ने किया। इस अवसर पर प्रोफेसर महदी ने कहा कि कॉन्टेक्ट लेंस पहनने से कई संभावित लाभ होते हैं और वे निकट-दृष्टि दोष (मायोपिया), दूर-दृष्टि दोष (हाइपरोपिया), एस्टिमैटिस्मर धुंधली दृष्टि, दूर एवं निकट दोनों और प्रेस्बायोपिया सहित अधिकांश दृष्टि समस्याओं जैसे उम्र बढ़ने वाले वयस्कों में नजदीक की धुंधली दृष्टि को ठीक करते हैं।

उन्होंने कहा कि हाल ही में इस क्षेत्र में कई प्रगति हुई हैं और दृष्टि बहाल करने के लिए कई ट्रामा और जलने के मामलों में कॉन्टेक्ट लेंस का उपयोग किया जाता है। उन्होंने छात्रों के लाभ के लिए सीएमई कम कार्यशाला आयोजित करने के लिए ऑप्टोमेट्री विभाग की सराहना की। उन्होंने छात्रों से ऑप्टोमेट्री के क्षेत्र में हुई प्रगति को जानने के लिए इस अवसर का उपयोग करने की अपील की। गगन साहनी, निदेशक, सिल्वर लाइन लैबोरेटरीज, नयी दिल्ली ने स्पेशलिटी कॉन्टैक्ट लेंस और मायोपिया कंट्रोल पर कार्यशाला का संचालन किया। उन्होंने कहा कि कॉन्टेक्ट लेंस पतले लेंस होते हैं जिन्हें सीधे आंखों की सतह पर लगाया जाता है। कॉन्टेक्ट लेंस का उपयोग दुनिया भर में 150 मिलियन से अधिक लोगों

करते है और उन्हें दृष्टि को सही करने या कॉस्मेटिक अथवा चिकित्सीय कारणों से प्रयोग में लाया जा सकता है। कॉन्टैक्ट लेंस का विश्वव्यापी बाजार अरबों अमेरिकी डॉलर का होने का अनुमान है। साहिनी ने कहा कि कॉन्टेक्ट लेंस दृष्टि सुधार के लिए आंखों के साथ चलते हैं जो महसूस कर सकते हैं और प्राकृतिक दिख सकते हैं। उन्होंने छात्रों को यह भी बताया कि कॉन्टेक्ट लेंस बाहर, कम तापमान वाले काम के माहौल में, या खेल खेलते समय चश्मे की तरह फॉग से प्रभावित नहीं होते हैं। वासिद अली, केयर-टच विजन सेंटर, लखनऊ ने आर्टिफिशियल आई के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कुछ दर्दनाक परिस्थितियों में कृत्रिम आंख के उपयोग के महत्व पर जोर दिया।

इस कार्यशाला में प्रोफेसर एस रियाज मेहदी, डीन फैकल्टी ऑफ एलाइड हेल्थ साइंसेज, एरा यूनिवर्सिटी, प्रोफेसर टीएच. खान, एसोसिएट प्रोफेसर, नेत्र विज्ञान विभाग, सुनील कुमार गुप्ता, प्रमुख, ऑप्टोमेट्री विभाग एवं ऑप्टोमेट्री विभाग के संकाय सदस्य, रागिनी मिश्रा, जमशेद अली, नम्रता श्रीवास्तव, प्रतीक शर्मा और सुश्री रमलाह अख्तर भी कार्यक्रम में शामिल हुईं।